आलस्य और अलबेलापन - 26

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ बेहद के विश्व की आत्मायें सदैव इमर्ज होनी चाहिए। जब आप लोग अभी मर्ज करो तो उन आत्माओं को भी संकल्प उत्पन्न हो कि हम भी अपना भविष्य बनायें।

➳ _ ➳ आपके संकल्प से उनको संकल्प इमर्ज होगा। **विश्व-कल्याणकारी का अर्थ ही है विश्व के आधारमूर्त ज़रा भी अलबेलापन विश्व को अलबेला बना देगा। इतना अटेन्शन रहे।**

(24.12.1979)

➳ _ ➳ यह विशेष अटेन्शन रखो। इसी में ही अलबेलापन आ जाता है। **मैं ठीक हूँ, ठीक तो हो लेकिन जो ठीक रह सकता है वह स्वयं को मोल्ड भी कर सकता है।** अगर मानो दूसरे को मेरी कोई चलन से कोई भी संकल्प उत्पन्न होता है तो स्वयं को मोल्ड करने में नुकसान ही क्या है।

➳ _ ➳ फिर भी सबकी आशीर्वाद तो मिल जायेगी। यह आशीर्वाद भी तो फायदा हुआ ना। क्यों क्या में नहीं जाओ। यह क्यों, यह ऐसे होगा वैसे होगा। इसको फुलस्टाप लगाओ। **अब यह विशेषता चारों ओर लाइट हाउस के मुआफिक फैलाओ। इसको कहा जाता है एक ने कहा दूसरे ने माना अर्थात् अनेकों को सुख देने के निमित।** इसमें यह नहीं सोचो कि मैं कोई नीचे हो गया। नहीं।

➳ _ ➳ **गलती की तभी मैं परिवर्तन कर रहा हूँ यह नही सोचो लेकिन सेवा के लिए परिवर्तन कर रहा हूँ।** सेवा के लिए स्थूल में भी कुछ मेहनत करनी पड़ती है ना तो श्रेष्ठ, महान आत्मा बनने के लिए थोड़ा बहुत परिवर्तन भी किया तो हर्जा ही क्या है? इसमें 'हे अर्जुन बनो। इससे वातावरण बनेगा। एक से दो, दो से तीन।

(26.12.1979)

➳ _ ➳ **अगर कोई गलती है और मान ली तो यह कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन गलती नहीं है और लोक संग्रह अर्थ करना पड़ता है। 'यह है महानता'।** इसमें अगर कोइ समझाता भी है कि इसने यह किया अर्थात् नीचे हो गया, तो दूसरों के समझने से कुछ नहीं होता, बाप की लिस्ट में तो आगे नम्बर है ना। इसको दबाना नहीं कहा जाता है। यह भी ब्राह्मणों की भाषा होती है ना - **कहाँ तक दबेंगे, कहाँ तक मरेंगे, कब तक सहन करेंगे. अगर यहाँ दबेगे भी तो अनेक आप के पाँव दबायेंगे।** यह दबाना नहीं है लेकिन अनेकों के लिए **पूज्य बनना है। महान बनना है।**

(05.04.1980)

➢➢ संकल्प

➳_ ➳ बेहद के विश्व की आत्माओ को सकाश देने के लिये..

→ **रोज आत्माओ को इमर्ज करना..**

→ **उनका आह्वान करना..**

→ **उनसे बाते करना..**

➳ _ ➳ हम जो भी संकल्प करेंगे वो संकल्प का उन्हें असर होगा..

→ उनके मन रूपी धरनी पर महान संकल्पों क बिज बोना है..

→ आपके संकल्पों से उनके अंदर संकल्प इमर्ज होगा..

➳ _ ➳ विश्व कल्याणकारी का अर्थ ही है..

→ **विश्व के आधारमूर्त..**

→ **विश्व के आधारसतम्भ..**

➳ _ ➳ जरा भी अल्बेलापन विश्व को अलबेला बना देगा..इतना अपने संकल्पों पर अटेशन देना है..

➢➢ अहंकार

➳ _ ➳ मेरी कोई चलन से कोई भी संकल्प उत्पन्न होता है किसीको..

→ **तो मैं को, अहंकार को जबर्दस्त चोट पहुचती है..**

➳ _ ➳ गलती की उसे स्वीकार कर लेना चाहिए..

→ परन्तु अहंकार भूल को स्वीकार करने ही नही देता है..

→ **सबके सामने अपनी भूल स्वीकार करना महानता है..**

➢➢ सहन

➳ _ ➳ ब्राह्मणों की भाषा है..

→ कहा तक दबेंगे..

→ कहा तक मरेंगे..

→ कहा तक सहन करेंगे..

■ **परमात्मा की आज्ञा है..**

■ **सहनशील बनो..इसलिए मुझे सहन करना है..**

▶ **अगर यहा दबेंगे तो अनेक आपके पाव दबायेंगे..**

▶ यह दबाना नही है..लेकिन अनेको क लिये **पूज्य बनना है..महान बनना है..**

➢➢ फुल स्टॉप

➳ _ ➳ अगर कोई कुछ कहता है तो उसके शब्द तीर की तरह खुच जाता है..उसको निर्दोष समझना यह बड़ी बात है..क्या क्यों में नहीं जाना बहोत बड़ी बात है..हजार प्रश्नों मन में उठते ही है..उसको स्टॉप कर फुल स्टॉप लगाना है..

→ **डायरेक्ट फुल स्टॉप नहीं लगा सकेंगे..**

→ पहले नेगेटिव को पॉजिटिव करना पड़ेगा..बाद में फुल स्टॉप लगेगा..

➢➢ सत्य

➳ _ ➳ दुसरो के समझाने से कुछ नही होता है..स्वयं **अगर सत्य हो..तो वो १ दिन आपेही प्रत्यक्ष जरुर होगा..**

→ सत्य पर विश्वास रखना है..की हम राईट है..

■ **जहा सत्य है..वहा परमात्मा है..**

▶ इस वाक्य पर विश्वास रखना है..तभी अचल अडोल रहेंगे..

➳ _ ➳ यह जो संसार क रंगीन कपड़े है..वह भिखारियों के लिए है..उन्हें छोड़ो अब..१ बार भगवे वस्त्र धारण कर लिये तो कर लिये..